निशी आदिवासी किंवदंती

तानी

डॉ. जोराम यालाम नाबाम
संपर्क- 9436044288

कोई आवाज़ नहीं थी, चारों ओर गहरा सन्नाटा.....निस्तब्धता का अनंत विस्तार....न कोई रंग, न कोई हलचल। प्रकाश भी नहीं, अंधकार भी नहीं। एक विशेष अवस्था अस्तित्व में थी, जिसे 'सेदी', 'जिमी-जमा', 'न्योदो', 'दोत:'. 'मिलो', 'मेदाङ्' आदि नामों से पुकारा गया। इन समस्त नाम-शब्दों का एक ही अर्थ है---'महाशून्य'। इसे 'महागर्भ' भी माना जाता है, जिसे 'जिमी तानी' अथवा 'जमा तानी' कहा जाता है। जिमी शब्द स्त्रीलिंग है, जबकि जमा पुल्लिंग। स्मरणीय है कि सेदी और मिलो को भी स्त्री प्रतीक माना जाता है तथा न्योदो और दोत: को पुरुष प्रतीक।

महाशून्य का न कोई रूप है, न कोई आकार। उसे स्त्री और पुरुष, दोनों का सम्मिलित स्वरूप स्वीकार किया जाता है। यह महाशून्य सर्वत्र व्याप्त है तथा सर्वदा मौन है। विश्वास किया जाता है कि समस्त जीव इस महाशून्य से ही उत्पन्न हुए हैं, अत: सब उसी के हैं। इस कारण उसकी बलि नहीं चढ़ाई जाती है। महाशून्य अथवा महागर्भ को जिमी और जमा कहा गया है और विश्वास है कि जिमी (स्त्रीलिंग होने के कारण) माता तथा जमा (पुल्लिंग होने के कारण) पिता है। इस विश्वास के चलते यह माना जाता है कि ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी दृश्यमान है, वह माता जिमी तथा पिता जमा का ही व्यक्त स्वरूप है।

महाशून्य (महागर्भ) से अचानक सूर्य, चन्द्रमा और तारे उत्पन्न हुए। इन्हें आँखें कहा गया। आँखें साक्षी होती हैं।

सूर्य के अनेक नाम हैं--- 'अजङ्', 'मीदो', 'दोनी', 'अजी' आदि। उसे माता, मौसी, नाना, नानी, सास आदि भी माना गया है। उन्हें माता जिमी और पिता जमा की आँखें कहा गया है। विश्वास है कि माता सूर्य की दृष्टि जहाँ-जहाँ पड़ती रही, वहीं-वहीं जीवन के अंकुर फूटते रहे। अग्नि भी माता सूर्य का ही स्वरूप है। धरती के भीतर भी सूर्य का अंश विद्यमान हैं, जिसे 'माता दुगनन' कहा जाता है। सूर्य माता दुगनन के रूप में हमेशा उदित होता है, लेकिन उसका स्वभाव और कार्य पुरुष का माना जाता है।

चन्द्रमा के भी एकाधिक नाम हैं, जैसे 'पोलो', 'हाई' आदि। जल को भी उसी का रूप माना जाता है। सूर्य के समान चन्द्रमा को भी कभी ससुर, कभी मौसा, कभी नाना के रूप में देखा गया है। उसे पिता भी माना गया है। शीत ऋतु में उसे 'माता दाक्का आने' कहा जाता है।

जब अंधकार अपने चरम पर होता है और प्रकाश की आवश्यकता होती है, तो पोलो आता है, ठीक वैसे ही, जैसे संकट काल में पिता अपनी संतान की रक्षा के लिए सामने आ खड़ा होता है। पोलो अपनी किरणों के हाथों में अपनी संतानों के हाथ थाम कर उन्हें गंतव्य तक पहुँचाता है।

चन्द्रमा अधिकतर काम माता के रूप में करता है, सूर्य से कहीं अधिक। इसके बावजूद उसे पिता कहा गया है, क्योंकि वह कई-कई दिन दिखाई नहीं देता, अर्थात् अपनी संतान के निकट नहीं रहता, जबकि माँ हमेशा रहती है, इस कारण वह पिता की भूमिका में मानी जाती है।

चन्द्रमा 'पोल', अर्थात् ऋतु है। जब उसकी कलाएँ आधी होती हैं, तो मनुष्य के शरीर में कुछ बदलाव दिखाई देते हैं, जैसे कमर में दर्द का होना। जब उसकी कलाएँ बढ़ती हैं और उसका आकार बढ़ने लगता है, तो चूहे शोर करते हुए अपने बिलों से बाहर आने लगते हैं। जब आसमान में पूरा चाँद विराजने को होता है, तो यह इस बात का संकेतक माना जाता है कि बाँस इस्तेमाल के लिए तैयार हो गया है। अगर उसे अभी नहीं काटा गया, तो उस पर दीमक हमला कर देगा और बाँस की फसल किसी काम नहीं आ सकेगी। आकाश में चन्द्रमा के चमकने की एक दशा ऐसी होती है, जब एक चिड़िया गाने लगती है। वह गा-गा कर संकेत करती है कि फसल की कटाई का समय हो गया है। इस प्रकार चन्द्रमा को वह शक्ति माना गया है, जिसके कारण मौसम का अनुमान किया जा सकता है और जिसके प्रभाव में मनुष्य जीवन-यापन का निर्धारण करता है। इसी कारण ऋतु को 'पोल', अर्थात् चंद्रमा कहा गया है।

सूर्य और चन्द्रमा की उत्पत्ति के कारण दिन और रात अस्तित्व में आए, तब काल का प्रारम्भ हुआ। इसे 'कोलो' या 'कोलो तानी' तथा 'कुरियुम' या 'कोरियुम तानी' कहा गया। कोलो का अर्थ है, प्रकाश और कोरियुम का अर्थ है, अंधकार। इन दोनों को भी माता जिमी की संतान और एक-दूसरे की शक्ति माना गया है।

कहा जाता है कि छ: सूर्य उत्पन्न हुए थे। इनके नाम हैं—'जीकू', 'जीत', 'जीतन', 'जीयर', 'जीगी' और 'जीनिनायक'। इनमें से केवल एक ही बचा रह सका, 'जीनिनायक'। शेष पाँच अपने ही तेज में जल कर नष्ट हो गए। जीनिनायक ही हमारा वर्त्तमान सूर्य है। इसे सृजनकर्ता और पालनकर्ता माना जाता है। विश्वास किया जाता है कि हमारे वर्तमान सूर्य की भी आयु है। जैसे ही समय आएगा, माता जिमी और पिता जमा उसे अपने में समा लेंगे। जिसकी उत्पत्ति है, उसका अंत भी होना ही है। जो प्रकट होता है, वह विलीन भी होता है। यही क्रम है।

एक जोरदार ध्वनि हुई और पृथ्वी प्रकट हुई। पृथ्वी को 'तानी मोमेन' (जहाँ तानी क्रीड़ा करते हैं) कहा गया। सूर्य के तेज की अधिकता के कारण पृथ्वी पर जीवन नहीं पनपा। इस सूर्य को 'जीतन दोन्यी'---

अर्थात् वह सूर्य, जिसने जीवन को पनपने के पूर्व ही मार डाला-- कहा गया। पृथ्वी भी दो बार नष्ट हुई। हमारी आज की धरती माता तीसरी बार उत्पन्न हुई धरती है। समय आने पर यह भी नष्ट हो जाएगी।

मिट्टी और जल साथ-साथ उत्पन्न हुए थे, लेकिन शुरू में धरती की अवस्था मुख्यत: द्रव-रूप ही थी, क्योंकि जल की मात्रा अधिक थी। धरती की इस अवस्था को 'रुलुम-रलह' कहा जाता है। जब जीनिनायक दोनी--- अर्थात्, जिसमें तेज/ताप संतुलित रूप में हो--- की किरणों ने धरती का स्पर्श किया, तब धरती धीरे-धीरे ठोस होनी शुरू हुई और उसे 'माता सचङ्' कहा गया।

माता जिमी ने धरती में प्राणवायु का संचार किया। ध्वनि की उत्पत्ति धरती के साथ ही हुई थी, इस कारण हवा 'री री' की आवाज़ के साथ बहाने लगी। जल ने बादल का रूप ग्रहण किया और संगीतमय स्वर के साथ धरती पर बरसने लगा। जल और मिट्टी का मिलन हुआ। जीवन का प्रारम्भ हुआ। आज भी कभी-कभी सुनने को मिलता है कि हम 'न्योदो', अर्थात् बारिश की संतान हैं। मान्यता है कि जल की बूंदों के धरती पर बरसने से विभिन्न वनस्पतियों, पेड़-पौधों, पशुओं आदि की उत्पत्ति हुई। जल, मिट्टी, वायु, पत्थर और अग्नि से निम्नांकित की उत्पत्ति हुई—

- निग तानी : पेड़-पौधे और पंखों वाले पक्षी।
- निब तानी : मिथुन, गाय, बकरी, सूअर, हिरन, बारहसिंघा, हाथी।
- नीबङ (नीकूर) तानी : बिल्ली, शेर, चीता, बाघ।
- नीसी तानी : जल-जीव।
- नीमा तानी : लघु आकार वाले मानव।
- न्यीदक तानी : विष और दोल्यी (रोग)।
- नीया तानी : विविध रंगों और आकारों वाले मानव।

इन सभी को 'दोनी', अर्थात् सूर्य और 'सचङ', अर्थात् धरती के विवाह के फलस्वरूप उत्पन्न माना जाता है। सम्पूर्ण प्राणी जगत की उत्पत्ति का रहस्य सूर्य और धरती का संबंध ही है।

'तानी' में 'ता' का अर्थ है, सूर्य और 'नी' का अर्थ है, साँस लेने वाला प्राणी। सूर्य के दौला (वीर्य) से उत्पन्न प्राणियों को 'तानी' कहा गया। इसी से 'तानी-संस्कृति' का आविर्भाव हुआ। आज भी इससे जुड़े अधिकतर पुरुषों के नाम का पहला अक्षर 'त' होता है। आबोतानी लोग 'दोनी', अर्थात् सूर्य से अपने वंश की गणना प्रारम्भ करते हैं। वे दोनी>नीया>नीतू>न्यी>निकुम>निया>आबोतानी के अनुसार अपने वंश की पहचान कराते हैं। दूसरी ओर कुछ लोग 'माता सिची' अथवा 'सिसी' से वंश-गणना करते हैं। इनके मत में सिसी>सीबुक>बुकसिन>सिंतु>तूरी अथवा रिनी अथवा आबोतानी का निर्माण हुआ है। सिची को 'सेदी' भी कहा जाता है और कुछ लोग वंश की गणना सेदी>दीलिङ>लितुङ>तूये>येपे>पेदुङनाने>दोनी तानी, अर्थात् सूर्यवंशी आबोतानी के अनुसार करते हैं।

'नीया तानी' धरती के पहले मानव थे। नीया मानवों में पहले नारी की उत्पत्ति हुई। यह इसलिए कि उसे गर्भ धारण करना था। पहली नारी को 'सचङ', अर्थात् धरती पुकारा गया। अपने गर्भ से जन्म देने के कारण वह माता कहलाई। उसने भार वहन किया, अत: उसे पुरुषरूपा भी माना गया। यह भी कहा गया कि नारी आकाश (बादल) अथवा न्योदो का रूप भी है और उसका कार्य भी उसके समान है। बादल बन कर मिट जाता है और सृजन का कारण बनता है। नारी भी यही करती है।

नीया तानी (प्रथम मानव) की दो संतानें हुईं, 'पोय तानी' और 'निया तानी'। नीया का अर्थ होता है, मनुष्य और पोय का अर्थ है, वह आत्मा, जिससे चलने वाले व सोचने वाले प्राणी उत्पन्न होते हैं। इन्हें स्थानीय भाषा में ऊईयू (जिसका एक अर्थ देवता भी होता है) कहा जाता है। मान्यता है कि ऊईयू से किर, ल्यार, पोमतलोम, चुङत, पीलिया आदि का जन्म हुआ, जिनके वंशज, मङजङ, चिन्, सिकी आगे चल कर आबोतानी के दुश्मन हुए।

'निया तानी' ने माता 'पेदुङ' के साथ विवाह किया, जिनसे कई पुत्र हुए, यथा; 'रोबो', 'तापिन', 'दोदिर' आदि। इन्हीं में आबोतानी भी थे, जिनके वंशज आज भारत के अरुणाचल, असम राज्यों और चीन देश में रहते हैं। आबोतानी को 'नीबो' भी कहा जाता है। अपने भाइयों में आबोतानी सबसे छोटे थे। उनकी एक बहन थी, जिसका नाम 'दोलियाँ चांजा' था। वह भाई-बहनों में सबसे छोटी थी।

माता पेदुङ नाने में धरती तत्त्व अधिक था। वह शांत, सौम्य, धर्यशील, और स्नेही थी। उनमें चन्द्रमा की शीतलता थी। पिता निया तानी (जिन्हें दोरे आबो भी कहा जाता है) वायु, मिट्टी, पत्थर, और सूर्य तत्त्व से युक्त थे। उनके नाम का एक अर्थ ही है, वह आत्मा, जो धरती के ऊपरी हिस्सों में मौजूद रहती है। आज भी अगर किसी अनुभवी बुजुर्ग को भविष्य जानना होता है, तो वह पत्थरों पर ध्यान केंद्रित करता है और विश्वास किया जाता है कि पत्थर उसकी सहायता करते हैं।

'रोबो' 'आबोतानी' का बड़ा भाई था। उसे तारो, तारु, बारो, ओब आदि कई नामों से पुकारा जाता है। रोबो का स्वरूप तो मानव का था, लेकिन बुद्धि से वह मूर्ख पशु के समान था। वह मोटा-तगड़ा था तथा हमेशा भोजन की तलाश में रहता था। उसकी आवाज़ भारी थी। उसमें और तानी में बस एक ही समानता थी, वह यह कि दोनों ही प्रेम की चाहत से युक्त थे। रोबो था तो अबोध, किन्तु अपने को तानी से बुद्धिमान सिद्ध करने की कोशिश करता रहता था। आबोतानी में सूर्य के दौला (वीर्य) का तेज और शक्ति थी तथा चन्द्रमा की शीतलता थी। आबोतानी का एक नाम 'बङ्'नी भी था, जिसका अर्थ होता है, मानव। वह ज्ञान का रूप था। उसकी आँखें बड़ी-बड़ी, आगे निकली हुई और दृष्टि तेज थी। केश काले लंबे घुंघराले और बिखरे हुए थे। उसकी चौड़ी छाती, गोरा बदन और सुन्दर चेहरा किसी के भी मन में ईर्ष्या पैदा कर सकते थे। जिद्दी और अड़ियल भी था। विश्वास किया जाता है क उसे माता पेदुङ नाने ने बेंत और चिड़ियों के पंखों से

बना 'गेम्पू' कटि-वस्त्र के रूप में पहनना सिखाया था। पिता ने उसे जानवरों की खाल से निर्मित वस्त्र धारण करना सिखाया।

तानी को 'न्यीपो तानी' भी कहा जाता है, जिसका अर्थ होता है, बड़ी और निकली हुई आँखें। उनका असली नाम 'दोनी' था, लेकिन उनकी बुद्धि और तेजस्विता को देख कर माता ने उन्हें सूर्या वंशी आबोतानी, अर्थात् सबका पिता कह कर पुकारा। तभी से उनका नाम आबोतानी पड़ गया। वे बचपन से ही विलक्षण और माँ के दुलारे थे। कहा जाता है कि उनके जन्म के समय पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों में आनंद छा गया था, जिसे देख कर माता समझ गई कि उनका पुत्र कोई साधारण मानव नहीं है।

रोबो आबोताने की बुद्धि और शक्ति से जलता रहता था। दोनों भाइयों के बीच हमेशा झगड़ा रहने के कारण माता-पिता ने उन्हें अलग-अलग रहने को कह दिया। अब तानी सूर्य था, तो रोबो चन्द्रमा। तानी दिन था, तो रोबो रात। तानी प्रकाश था, तो रोबो अंधकार। दोनों बराबर के बली थे-- अंतर था, तो केवल बुद्धि का। लेकिन यहाँ भी एक विशेष बात थी, वह यह कि तानी और रोबो एक दूसरे के पूरक थे। तानी ज्ञानी था, रोबो उस ज्ञान को बढ़ाने वाला। तानी अत्यधिक चालाक था, रोबो मासूम। तानी का स्वर तेज और तीखा था, रोबो की आवाज़ भारी। दोनों की विशेषताएँ मिल कर दोनों को पूर्ण मानव बनाती थीं।

दोलियाँ जाँचां को तानी संस्कृति की प्रथम पुजारी माना जाता है। कहते हैं उन्होंने कभी विवाह नहीं किया। उन्होंने कई बार तानी की रक्षा की तथा उन्हें पूजा और ध्यान की विधियाँ पत्थर पर लिख कर दीं। यह भी कहा जाता है कि इस पत्थर को सिकी के लोगों ने छीन लिया था। दोलियाँ जाँचां की प्रेरणा से 'तोड़े', 'लोमे', 'रूपू', 'रूलू', 'लामी', 'लाया' आदि अनेक स्त्री-पुजारी बनीं, जिन्हें बड़ा ज्ञानी माना जाता है। यह भी प्रचलित है कि दो पुरुष पुजारियों ने ईर्ष्या के कारण कई प्रकार के लांछन लगा कर दोलियाँ जाँचां को पुजारी बनने से रोकने की कोशिश की थी। इस कोशिश को आबोतानी द्वारा सख़्ती से कुचल दिया गया था। दोलियाँ जाँचां को आबोतानी की चौथी, कभी-कभी पाँचवीं आँख भी कहा गया है। उन्हें ज्ञान की देवी माना जाता है। प्रत्येक पूजा उन्हीं के नाम से शुरू होती है।

मान्यता है कि अमृत की एक-एक बूँद से एक-एक भाषा की उत्पत्ति हुई है। मिट्टी, पत्थर, पेड़-पौधे, घास-वनस्पतियां, पहाड़--- सभी को जीवित माना गया है और यह भी कि इन सबकी अपनी-अपनी भाषाएँ हैं। आज भी कुत्ते पेड़-पौधों से मार्ग पूछते हैं। संसार की सभी भाषाओं का स्रोत नारी है। किसी भी पुरुष तानी की भाषा का अस्तित्व मौजूद नहीं है। बच्चों ने अपनी माताओं से ही भिन्न-भिन्न भाषाएँ सीखीं। उन्होंने अपने बच्चों को पहनने-ओढ़ने, केश संवारने के समान ही भाषा का ज्ञान भी कराया।

(**परिचय :** लेखिका राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में सहायक प्रोफ़ेसर पद पर कार्यरत हैं।)